IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# उपेन्द्रनाथ अश्क और उनकी कहानी 'पिंजरा'

डॉ० किरण कुमारी
सहायक प्राध्यापक
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

उपेन्द्रनाथ अश्क हिन्दी के लब्ध–प्रतिष्ठ कहानीकार हैं। इन्होंने प्रेमचन्द की यथार्थवादी परम्परा को अपने कथा– साहित्य द्वारा विकसित किया है। आरम्भ में ये आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की कहानियाँ लिखते थे, पर बाद में यथार्थवाद की भूमि पर उतर आए। यथार्थवादी कहानियों में ही इनका व्यक्तित्व उभर पाया है। प्रेमचन्द के समान ही अश्क का आगमन उर्दू कथा–क्षेत्र से हिन्दी कथा–साहित्य में हुआ था। सन् 1926 से अब तक कहानी रचना के सोपानों को पार कर वे प्रौढ़ता और ख्याति के उच्च–शिखर तक पहुँचे। सन् 1926 से 1933 तक उनकी कहानियाँ आदर्श प्रधान हैं। सन् 1933 तक प्राप्त उनकी हिन्दी कहानियों में प्रेमचन्द की आदर्शोन्मुख यथार्थवादी प्रवृत्ति की प्रधानता विद्यमान है। सन् 1933 के पश्चात् उनकी कहानियों के संकलन हैं, 'पिंजरा', 'अंकुर', 'निशानियाँ' और 'दो धारा'।

उपेन्द्रनाथ अश्क ने मध्यमवर्गीय समाज को अपनी कहानियों की पृष्ठभूमि बनाया है। व्यक्ति के दर्द का स्रोत खोजते–खोजते समाज के दर्द का भी उन्हें आभास मिला है और वह कहानी में रूपान्तरित हो गया है। मानव–मन की अनजानी और अनमापी गहराइयों के साथ ही सामाजिक व्यवस्था के चक्रव्यूह के विविध घात–प्रतिघातों को भी उन्होंने अपनी कहानियों में सफलतापूर्वक उतारा है। 'डाची' और 'काँकड़ा का तेली' में उनकी गहरी अनुभूति व्यक्त हो सकी है। कालक्रम से मध्यवर्गीय व्यक्ति के सामाजिक जीवन में जो विद्रूपताएँ आ गई हैं, उन्हें उभारकर कहानी के माध्यम से पाठकों के समक्ष रख देना अश्क की निजी विशेषता है। व्यक्ति–सत्य एवं संवेदन के धरातल पर सामाजिक सत्य को वे सफलता के साथ उभार सके हैं। व्यष्टि–सत्य और वैयक्तिक अंतर्दृष्टि के धरातल पर सामाजिक यथार्थ को अश्क ने शब्द दिये हैं। 'अंकुर',

'उबाल', 'चट्टान' और 'पलंग' संकलन की 'ठहराव', 'बेबसी', 'पतंग', 'झाग' और 'मुस्कान' आदि कहानियों में सेक्स की भूख का नग्न चित्रण अत्यन्त यथार्थवादी एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से हुआ है।

जैनेन्द्र कुमार कहानी के बारे में अपना मंतव्य कुछ इस प्रकार प्रकट करते हैं– ''कहानी तो एक भूख है जो निरन्तर समाधान पाने की कोशिश करती रहती है।''[1] दूसरे शब्दों में कहानी जीवन के संघर्षमय स्वरूप की झाँकी है। जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ आती हैं। इन्हें लेकर जो कहानियाँ रची जाती हैं उन्हें समस्या प्रधान कहानी कहा जाता है। वस्तुतः समस्या प्रधान कहानी ही श्रेष्ठ कहानियों के वर्ग में मानी जाती है क्योंकि इससे जहाँ एक ओर समाज की प्रवृत्तियों का उद्‌घाटन होता है, वहीं दूसरी ओर उसके समाधान की ओर भी जनता का ध्यानाकर्षण होता है। इस प्रकार समस्या प्रधान कहानियों से सामाजिक संतुलन को विशेष बल प्राप्त होता है। अश्क इस सामाजिक उपादेयता से भिज्ञ थे। यही कारण है कि उन्होंने अधिकांश कहानियों में किसी समस्या का अवलम्ब लिया है। जो कहानियाँ सामाजिक क्षेत्र के अन्तर्गत आती हैं, उन्हें दूसरे वर्गों में भी स्थान दिया जा सकता है। साथ ही प्रत्येक कहानी का केवल एक ही दृष्टिकोण न होकर उसमें अनेक रूपों का प्रच्छन्न स्वर ध्वनित होता है।

उपेन्द्रनाथ अश्क ने कहीं अत्यन्त वैयक्तिक ढंग से और कहीं सामाजिक आवरण के माध्यम से अनुभूत सत्य एवं जीवन–बोध को कहानियों में रूपायित किया है। 'पिंजरा' नामक कहानी में स्त्री के सीमित क्षेत्र, वर्ग भावना, अछूत समस्या एवं धनी–निर्धन आदि विभिन्न संकुचित जीवन दृष्टि की समस्याएँ दिखाई देती हैं। शान्ति, जो कहानी की नायिका है, अपने पुत्र को इसलिए पीटती है क्योंकि वह इतने बड़े बाप का बेटा होकर भी धोबी की लड़की के साथ खेलता था। शान्ति का पति लान्डरी का काम करता था जो महीलाल स्ट्रीट में थी। जितनी आय थी उतना ही व्यय था। शान्ति के घर के आसपास धोबी, भंगी, धीवरों की बस्ती थी। सुविधा के लिए पानी सभी शान्ति के नल से ले जाते थे पर जब साबुन, तौलिया आदि गायब होने लगा तो टोंटी पर लकड़ी का बॉक्स लगाकर चाबी शान्ति ने अपने पास रख ली। वहीं से पानी लेने के क्रम में शान्ति का परिचय गोमती से होता है। प्रस्तुत कहानी 'पिंजरा' में भी मध्यवित्त जीवन की सामाजिक विकृति का ही चित्र है। धन का नशा मन में बड़प्पन का भाव उत्पन्न करता है। आर्थिक स्तर के ऊँचा चढ़ते ही मन में बड़े–छोटे का, कुलीन–अकुलीन का भाव पैदा होने लगता है। पूँजी हाथ आते ही मनुष्य अपने को दूसरों से बड़ा और दूसरों को अपने से छोटा मानने लगता है। मनुष्यता की मुक्त संचार–गति अवरुद्ध हो जाती है और व्यक्ति झूठी मर्यादा के घेरे में घिर जाता है। तब घर ही 'पिंजरा' बन जाता है और पिंजर–बद्ध पक्षी की भाँति व्यक्ति मन–ही–मन छटपटाने लगता है।

मध्यवित्त नारी शांति की भी आज यही मनोदशा है। उसका पति लांडरी चलाया करता था और उससे होने वाली छोटी आय से किसी भांति जीवन–निर्वाह करता था। परन्तु समय बदलते देर नहीं लगती। आज वह कई मिलों का मालिक है, बड़ा आदमी है। शांति उस बड़े आदमी की पत्नी है। उसे भी झूठी शान, झूठी आन–बान में रहना है। जीवन का वैषम्य तो तब उपस्थित होता है, जब उसके सामने गोमती से मिलने का प्रश्न आ जाता है। शांति मानसिक तनाव में पड़ जाती है। गोमती एक ब्राह्मण की काली–कलूटी दरिद्र–कन्या है। शांति को अपने विगत दिनों की सुधि आ जाती है। यही गोमती है, जिसे चिथड़ों में देखकर वह उससे घृणा करती थी। फिर वे दिन आए जब गोमती ने अपने निश्छल स्नेह और निस्पृह सेवा से शांति का मन जीत लिया। शांति का नन्हा पुत्र भी बीमार था और उसके पति की भी दशा चिन्तनीय थी। सहारा कोई नहीं। तब उसने गोमती का सहारा लिया। गोमती संकट के दिनों में आड़े आई। शांति ने पहचाना कि इस काले कलूटे तन के भीतर बड़ा निर्मल मन है–''उसने उठकर गोमती के बच्चे को ले लिया था और जब वह फिर टाट पर बैठने लगी थी तो दूसरे हाथ से शान्ति ने उसका हाथ पकड़ चारपाई पर बिठाते हुए, उसे अपने बाजू में बाँध लिया था और कहा था–आज से तुम मेरी बहिन हुई गोमती।''[2]

फिर वह उसकी सहेली बन गई। वही सहेली आज बहुत दिनों के बाद ससुराल से आई है और शांति उससे मुक्त भाव, स्वच्छन्द मन से मिलती है। परन्तु उसके पति को यह सहन नहीं होता। झूठे बड़प्पन के भाव से भरा उसका मन शांति के मानवतापूर्ण सहज व्यवहार को देखकर खीझ जाता है। वे उसे डाँटते हैं–''तुम्हें शर्म नहीं आती, उस उजड्ड और गंवार औरत को लेकर तुम बैठी रहीं, तुम्हें मेरी इज्जत का ख्याल नहीं। उसे बगल में लिए उन सबके सामने से गुजर गयी। रायसाहब और उनकी पत्नी हँसने लगे और आखिर प्रतीक्षा कर चले गये।''[3] यह है मध्यवर्ग की आडंबरप्रियता, यह है शांति के पति का धन का अहंकार। लांडरी वाले धन्धे से निकलकर, अब वह लाहौर की प्रसिद्ध फर्म 'दीनदयाल एंड सन्स' के मालिक प्रख्यात शेयर ब्रोकर रायसाहब लाला दीनानाथ थे। दस साल में ही सब परिवर्तन हो गया था। गोमती जब लम्बे समय के बाद शान्ति से मिलने आई तो सहृदया शांति प्रतिष्ठित अतिथियों के साथ ब्रिज खेलना छोड़कर–गोमती से मिलने दौड़ पड़ती है। उसे वे दिन विस्मृत नहीं हुए हैं जब एक दिन वह अपने पति और नन्हें बच्चे के साथ बाजार गई थी। वहाँ से अच्छी बुरी चीजें खाने से पेट खराब हो जाता है। दिसम्बर का महीना था, कठिन जाड़े के दिन थे, ऊपर से वातावरण में कड़ुआ धुँआ था। बेटे को बुखार हो गया था और पति को जोरदार उलटी हो रही थी। शान्ति घबरा गई थी क्योंकि घर में न सास माँ थी, न कोई नौकर था। वह दौड़कर गोमती के पास गई थी और उसे सारा वृत्तांत बताया था। गोमती चूल्हे को पानी दिखाकर डॉक्टर बुलाने जाती है। लौटकर गोमती बच्चे को संभालती है और शान्ति अपने पति को, जिन्हें तीव्र गैस्ट्रो

ऐन्टिराइटिस हो गया था। गोमती शान्ति की विवशता देखकर अपने घर का काम जल्दी निपटाकर, एक जून खाकर, छाया की भाँति बच्चे की सेवा सुश्रूषा करती है। कुछ दिन के बाद जब वे ठीक हो जाते हैं तो शान्ति गोमती को बहन मान लेती है। उसी बहन से हार्दिकता से मिलने पर उसका पति अपनी नाराजगी व्यक्त करता है।

शान्ति का मन घुटन से भर जाता है। उसका आह्लाद तिरोहित हो जाता है। आत्मीयता का अभाव आज के मध्यवर्गीय जीवन की बड़ी समस्या है। वह उलझन में पड़ जाती है। यही सोचते हुए वह नौकर से कहती है कि गोमती से कहना कि बीबीजी अचानक आज मैके जा रही हैं और दो महीने वापस न लौटेंगी और इस प्रकार बहाना बनाकर उसे गोमती से दूर रहना पड़ा। वह पति की मानसिकता के कारण विवश थी। ''उपेन्द्रनाथ अश्क के कथा चरित्र अवश्य सीमित हैं, परन्तु उनमें विविधता है। वे हमारे जीवन के सच्चे प्रतिनिधि हैं''[4] ऐसा डॉ0 बेचन का मानना है।

पति की डाँट से विषण्ण होकर शान्ति गोमती से मिलना तो छोड़ देती है पर उसे प्रतीत होता है कि अपना घर ही उसके लिए पिंजरा है और वह उस पिंजरे में बँधी उस चिड़िया के समान है, जिसे खुली हवा में उड़ने की आजादी नहीं है। समाज की यह स्थिति कभी भी ठीक नहीं कही जा सकती। पूँजीवादी संस्कारों एवं झूठी मर्यादा के बंधनों से मुक्ति अत्यावश्यक है। इसके बिना जी को शांति नहीं है। यही इस कहानी की मूल संवेदना है।

मधुरेश 'हिन्दी कहानी का विकास' में लिखते हैं–''उपेन्द्रनाथ अश्क कहानी की मुख्य धारा में न होने पर भी इस क्षेत्र में शायद सबसे अधिक सक्रिय दिखाई देते हैं। वे पंजाबी और उर्दू की पृष्ठभूमि के साथ हिन्दी में आए। अपने आरम्भिक काल में ही उन्होंने 'कांकड़ा का तेली' जैसी यथार्थवादी कहानी लिखकर अपनी पहचान बनाई।''[5] कहानी जीवन का खंड–चित्र उपस्थित करती है, वह समग्र जीवन का चित्रण नहीं करती। जीवन के किसी विशेष क्षण को, जीवन की किसी विशिष्ट स्थिति को कहानीकार पकड़ लेता है और उसी को कहानी में रूपायित करता है। यदि कहानी के बारे में यह मान्यता ठीक है तो अश्क जी की प्रस्तुत कहानी इस मान्यता की सार्थकता को सिद्ध करती है। शांति की एक विशिष्ट मनःस्थिति–मानसिक तनाव की स्थिति के विशेष क्षण को कहानीकार ने बड़ी खूबी से पकड़ा है और कहानी की रचना की है। इस दृष्टि से यह कहानी खूब बन पड़ी है।

कहानी का आरंभ सहसा और नाटकीय है। आकर्षण के मूल केन्द्र से कथा का आरम्भ होता है और पाठक की जिज्ञासा जाग उठती है। शांति के मानसिक तनाव का चित्र सामने आता है–''छत पर बड़ा पंखा धीमी आवाज में अनवरत चल रहा था। दरवाजों पर भारी पर्दे हिल रहे थे और भारी कौच और उन पर रखे हुए रेशमी गद्दे, गलीचे और दरम्यान में रखे हुए छोटे–छोटे अठकोने मेज और उनपर पीतल के नन्हें–नन्हें हाथी और फूलदान और उसने अपने–आपको उस पक्षी–सा महसूस किया, जो विशाल, स्वच्छन्द आकाश के नीचे खुली स्वतंत्र हवा में आम की डाली से बँधे हुए पिंजरे में लटक रहा हो।''[6] वह पत्र लिखना चाहती है, पर लिख नहीं पाती। अपने प्यारे पुत्र को कमीनों के साथ खेलने के अपराध में पीटती है और बौखला–सी जाती है। फिर पश्च–प्रक्षेप प्रणाली से कहानीकार पाठक को पीछे की ओर ले चलता है और विगत दिनों की कहानी कहता हुआ लौटकर वर्तमान में आता है। फिर शांति पत्र लिखती है, पर उसके अन्तर में बैठी मनुष्यता उसे पत्र भेजने नहीं देती। उस पत्र को भी फाड़कर वह फेंक देती है और मैके जाने की झूठी खबर भेजकर साँस लेती है, मगर गोमती से मिल नहीं पाती। इस प्रकार शांति की करूण विवशता का चित्रण कर कहानी चुक जाती है। शांति की इस विवशता में मध्यवर्गीय नारी–जीवन की विवशता का चित्र है जो मर्म को छू जाता है। शमशेर बहादुर सिंह लिखते हैं–''इन चरित्रों में मनःस्थितिगत विशेषता की मुख्यता है, और वे निरपेक्ष से अधिक सापेक्षिक हैं।''[7] उपेन्द्रनाथ अश्क कवि, उपन्यासकार, नाटककार और कहानीकार भी हैं। 'पिंजरा', 'छींटे' और 'दो धारा' इनके प्रसिद्ध कहानी–संग्रह और 'गिरती दीवारें' इनका ख्यातिलब्ध उपन्यास है। केसरी कुमार लिखते हैं–''अश्क की कहानियों का विषय भी अज्ञेय व यशपाल की तरह आधुनिक शहरी जीवन ही है, उसमें भी खासतौर पर निम्न–मध्यम वर्ग। इस वर्ग के जीवन में जो क्लिष्टता, दुरूहता और ह्रास आ गया है, उसके चित्र प्रस्तुत करने में अश्क सिद्धहस्त हैं। व्यक्तित्व की सूक्ष्मताओं के कारण जीवन किस अवस्था में, किस प्रकार गतिमान होता है, यह 'अश्क' अक्सर दिखाते हैं।'' अश्क की भाषा चुस्त और प्रभावमयी होती है और चित्र खरे निखरे। सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियाँ में लिखते हैं–'' 'अश्क' सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण के पचड़े में नहीं पड़ते किन्तु चरित्र–चित्रण में कुशल हैं। कहानियों के सूत्र अपने आस–पास के जीवन की परिस्थितियों और वातावरण में ही निहित होते हैं। उनके चरित्र–चित्रण में उदारता कम होती है और बहुधा पात्रों का वह व्यंग्य या विद्रूप चित्र भी प्रस्तुत करते हैं, यों वह यथार्थ पर बल अधिक देते हैं।''[8]

'अश्क' अपनी रचनाओं में ज्यादातर निर्व्यैक्तिक रहते हैं। अपनी समग्रता में इनकी कहानियाँ पाठक पर गहरा प्रभाव डालती हैं। अपनी कहानियों में संकेतात्मक एवं प्रतीकात्मक रचना–विधान द्वारा सामाजिक परिपार्श्व से जुड़ते हुए समाजगत कुरीतियों, कुंठाओं को चित्रित करते हुए व्यक्ति मन की अतल गहराई को भी अश्क सफलता के साथ पकड़ सके हैं। शमशेर बहादुर सिंह लिखते हैं–'' 'पिंजरा' की शांति, 'पत्नीव्रत' के खन्ना साहब, 'अंकुर' की सेंकरी, 'उबाल' का चंदन, 'नासूर' का सुरजीत और ईश्वर, 'बैगन का पौधा' का बुड्ढा आदि हमारे जीवन–दर्शन के प्रतिनिधि अधिक और चरित्र कम हैं। इनके चरित्र–विधान का सबसे बड़ा कौशल चरित्रों का रहस्योद्घाटन एवं उनकी सीमाओं–कुंठाओं पर कटु व्यंग्य करना ही है।''[9] इनकी कहानियों में चरित्र–विकास काफी स्वस्थ और स्वाभाविक ढंग से हुआ है।

## निष्कर्ष–

सामाजिक रूढ़ियों एवं विकृतियों के मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करने के उपरांत भी अपनी व्यक्तिमूलक जीवन दृष्टि की प्रधानता के कारण अश्क प्रेमचंद की समष्टिमूलक साहित्य–परम्परा से पृथक हो जाते हैं। कहानीकार ने अपने कथ्य को मनोविज्ञान के सहारे कहने का प्रयास किया है और नारी की अन्तर्व्यथा के चित्रण में पूरी सफलता पाई है। केवल सामाजिक जीवन की विकृति का चित्र ही नहीं है, उसके कारणों का भी खुला संकेत है। मध्यवर्ग कब तक इस झूठी मर्यादा की भावना को ढोता चलेगा? क्या इसे ढोकर वह कुछ पायेगा भी? उन प्रश्नों का उत्तर पाठक को स्वयं से पाना है। कहानीकार अपना निष्कर्ष औरों पर लादता नहीं। चरित्र–चित्रण नहीं, स्थिति–चित्रण कहानी में प्रधान है। घटनाओं की भीड़ नहीं, छोटी–छोटी घटना से होनेवाली मानसिक प्रतिक्रियाओं के घात–प्रतिघात का चित्र है। 'अश्क' पाठक को धीमी लेकिन अनवरत गति से बहाये तो चलते हैं। इनकी कहानियों की शैली बहुत सरल और सपाट है। 'पिंजरा' एक सफल कहानी है और निश्चित रूप से उपेन्द्रनाथ 'अश्क' एक सिद्ध कथाकार हैं।

## संदर्भ सूची–

1. द्रष्टव्य, वासुदेव, हिन्दी कहानी और कहानीकार, वाणी–विहार, वाराणसी, द्वितीयावृत्ति, मई, 1957, पृ0सं0–19.
2. अश्क उपेन्द्रनाथ, पिंजरा, सामयिक साहित्य–सदन, चेम्बरलेन रोड, लाहौर, प्रथम संस्करण जून, 1944, पृ0सं0–15–16.
3. अश्क उपेन्द्रनाथ, पिंजरा, पिंजरा, सामयिक साहित्य–सदन, चेम्बरलेन रोड, लाहौर, प्रथम संस्करण जून, 1944, पृ0सं0–17.

4. डॉ0 बेचन, आधुनिक हिन्दी कथा–साहित्य और चरित्र–विकास, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, मार्च, 1965, पृ0सं0–179.
5. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, सुमित प्रकाशन, प्रयागराज की ओर से, लोकभारती प्रकाशन, ग्यारहवाँ संस्करण, 2022, पृ0सं0–52.
6. अश्क उपेन्द्रनाथ, पिंजरा, सामयिक साहित्य–सदन, चेम्बरलेन रोड, लाहौर, प्रथम संस्करण जून, 1944, पृ0सं0–04.
7. सिंह शमशेर बहादुर, दोआब, सरस्वती प्रेस बनारस, प्रकाशन वर्ष, 1948, पृ0सं0–92.
8. वात्स्यायन सच्चिदानंद हीरानंद, चन्द्र कृष्ण शर्मा, हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियाँ, प्रगति प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथमावृत्ति, पृ0सं0–154.
9. सिंह शमशेर बहादुर, दोआब, सरस्वती प्रेस बनारस, प्रकाशन वर्ष, 1948, पृ0सं0–92.